letter2:letter1.qxd 9/26/2010 8:42 PM Page 114

प्रिय युवा बंधुओं और बहनों, 28 जुलाई, 2005

गुलामी के पूर्व हमारी न्याय व्यवस्था बहुत सरल, तत्काल निर्णायक एवं संतोषप्रद हुआ करती थी। वह ''पंचमुखी परमेश्वर'' के नाम से जानी जाती थी। फलस्वरूप, ग्रामीण जीवन सद्भावनापूर्ण, सहयोगात्मक और सामंजस्यपूर्ण था।

मुस्लिम हुकूमतों के काल में शासकों ने शहरों एवं कस्बों में न्याय-व्यवस्था में कुछ परिवर्तन अवश्य किए थे। किन्तु ग्रामीण न्याय-व्यवस्था पूर्ववत् चलती रही।

सन् 1765 के बक्सर युद्ध में प्राप्त विजय के बाद अंग्रेजों ने अपनी शासन प्रणाली लागू करना प्रारंभ किया। राजस्व वसूली तथा न्याय-व्यवस्था पर अपना शिकंजा जमाना शुरू किया। बंगाल, बिहार और उड़ीसा को मिलाकर विशाल भू-भाग को जिलों की इकाईयों में बांटा गया। हर जिले के लिए अंग्रेज कलेक्टर नियुक्त किए गए। वे राजस्व वसूली के साथ ज़िला मजिस्ट्रेट का भी काम करने लगे। आगे चलकर दीवानी और फौजदारी अदालतों की जिला स्तर पर स्थापनाएं हुईं। सभी कचहरियों में अंग्रेजी भाषा प्रचलित की गई। वकीलों की आवश्यकता ज़रूरी हुई। 1828 से लार्ड विलियम बेंटिंग के जमाने से वकीलों का व्यवसाय नियमित रूप से चल पड़ा। वही सिलसिला अबाधित गति से आज भी चल रहा है। अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व स्वतंत्र भारत में भी बना हुआ है।

सुदैव से मेरा जन्म छोटे से ग्राम में हुआ और मेरा जीवन-कार्य भी ग्रामीण अंचल ही बना हुआ है। फलस्वरूप, मेरा जिला कचहरियों में जाना-आना होता रहा है।

जिला कचहरियों में 94 प्रतिशत से भी अधिक भीड़ ग्रामवासियों की ही रहती है। वे अपना-अपना मुकदमा लेकर वकीलों को घेरे रहते हैं।

वकील वर्ग सुशिक्षित, कानूनों का जानकार, वाद-विवाद में पटु तथा नेतृत्व में अग्रणी है। महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आदि अनेक वकीलों ने स्वातंत्र्य संग्राम का नेतृत्व किया था। आजादी पाने के बाद भी यह वर्ग राजनीति में प्रमुखता प्राप्त किए हुए है।

ग्रामवासी आपस में मुकदमेबाजी के द्वारा स्वयं को बर्बाद कर रहे हैं, यह देखते हुए भी वकील वर्ग उन्हें समझाता नहीं कि वे इस मुकदमेबाजी की बर्बादी से स्वयं को बचा लें। अपितु उनकी मुकदमेबाजी में ही वह अधिक रुचि रखता है। कारण, वही उसने आजीविका का साधन बना रखा है। ग्रामीणों की दयनीय दशा जानते हुए भी वह उनसे अधिक मेहनताना वसूलने में लगा रहता है। ग्रामवासी कर्जदार होते हुए भी हजारों वकीलों के सुखमय जीवन का बोझ ढोते आ रहे हैं। यह वकील वर्ग 1828 से गरीब ग्रामीण आबादी का सतत् शोषण करता आ रहा है। इस गंभीर समस्या की ओर हमारे नेतृत्व ने अपनी आँखें मूंद रखी हैं। यदि यही स्थिति बनी रही तो सरकारों द्वारा बनाई गई ग्राम विकास की योजनाएं क्या कभी देश की सत्तर प्रतिशत से अधिक ग्रामीण आबादी को खुशहाल बना पाएंगी?

देश की लगभग तीन-चौथाई आबादी की परवाह न करने वाली राजनीति में बने रहना मुझे असह्य हुआ और मैं ग्रामोदय की दिशा में चल पड़ा। ग्राम विकास के काम की मुझे जानकारी नहीं थी। उस दिशा में मैंने कभी काम किया हो नहीं था। अतः ग्रामवासियों के बीच रहकर उनकी समस्याएं समझना तथा आवश्यकताओं को पूर्ण करना ज़रूरी था। अतः मैंने अपनी गतिविधियों का केन्द्र ग्रामों को बनाया।

गांव-गांव घूमकर मैं ग्रामवासियों से विचार-विनिमय करने लगा। गांवों में कृषि ही प्रमुख व्यवसाय है। ग्रामवासी दिन में अपने-अपने खेतों में काम करने जाते हैं। उनसे विचार-विनिमय करने का समय रात में ही संभव होता है। अतः मुझे ज्यादातर रातें गांवों में ही बितानी पड़ती थी।

एक दिन एक वृद्ध ग्रामवासी ने मुझसे कहा, ''आप बेकार परेशान हो रहे हैं। आप समझ नहीं पाते कि जिन्हें भगवान ने ही कंगाल बनाया है, उन्हें क्या इंसान खुशहाल बना सकता है? आप इस काम में मत पड़िए।'' ग्रामवासियों को अपने भाग्य को कोसते हुए निराशावस्त होकर बैठे देख मैं बहुत दुःखी हुआ किन्तु हताश नहीं। मैं ग्रामोदय के मार्ग की खोज में लगा रहा।

मई का महीना था। चारों ओर सूखे का माहौल था। गोण्डा से लगभग 17 कि.मी. पर मुझे एक हरी-भरी बगिया नजर आई। मैं उसमें पहुंचा। वह एक माली की बगिया थी। वह माली अपनी लगभग एक एकड़ जमीन से सालभर में विभिन्न प्रकार की सब्जियों की अनेक फसलें उगाता था। अपनी ताजी सब्जियां गोण्डे की सब्जी मंडी में रोज बेचता था। अपनी कमाई में से उसने गोण्डा सब्जी मंडी में एक छोटा-सा मकान बनाकर किराए पर चढ़ाया था। वह खुशहाली की जिंदगी बिता रहा था। उसकी जीवन-गाथा ने मुझे बहुत उत्साहित किया।

दूसरे दिन मैं उस गांव पहुंचा, जहां के बूढ़े किसान ने मुझे बेकार परेशानी से बचने के लिए कहा था। मैंने उस बूढ़े किसान से कहा, ''बाबा! मैं कल एक अचरज देखकर आया हूँ। एक एकड़ भूस्वामित्व वाला बनारसी प्रसाद खुशहाली की जिंदगी जी रहा है।'' संयोगवश वह वृद्धा बनारसी प्रसाद से पुराना परिचित था। उस बूढ़े ने मुझसे कहा, ''बाबा जी! आप शहरी लोग हम ग्रामीणों की हालत समझ नहीं पाते। उस माली के पिता ने अपनी ससुराल से पक्के कुएं सहित वह जमीन पाई थी। वह माली सिंचाई की सुविधा पाकर खुशहाल हो गया है। यदि हमें भी सिंचाई के साधन मिलें तो हम भी उसी प्रकार से खुशहाली की जिंदगी पा सकते हैं।'' उस बूढ़े किसान ने दीनदयाल शोध संस्थान को 'ग्रामोदय' का मार्ग दिखाया। गरीब किसानों के लिए सिंचाई के साधन खोजने में शोध संस्थान जुट गया।

गोण्डा जिले में हिमालय से निकली बारों माह बहने वाली नदियां हैं। वह जिला पानी पर तैरता है। जिले में पचास हजार ट्यूबवैल्स लगाने पर भी भूगर्भ जलस्तर घटेगा नहीं। इसकी जानकारी पाकर दीनदयाल शोध संस्थान ने पांच एकड़ या उससे छोटे जोत वाले बीस हजार किसानों के खेतों में ट्यूबवैल्स लगाने का संकल्प लिया।

जनता पार्टी की सरकार थी। बैंकों से गरीब किसानों को सात हजार रुपयों तक कर्ज पाने की मंजूरी प्राप्त कराई गई। दो सात में सत्ताईस हजार पांच सौ सोलह नलकूप लग गए। जमीन में हजार फुट तक पत्थर का नामोनिशान नहीं है। 98 प्रतिशत से अधिक किसानों ने बैंकों का कर्ज वापस कर दिया।

किन्तु चित्रकूट इलाके की परिस्थिति एकदम भिन्न है। इसका अधिकांश इलाका विंध्याचल पहाड़ियों से घिरा है। वर्षा का पानी वह जाता है। अनेक गांवों में पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं होता।

गांव के सभी ग्रामवासी सामूहिक प्रयास करें, तभी बरसात का पानी रोककर साल भर के लिए पानी का संचय किया जा सकता है। लेकिन गांवों में मुकदमेबाजी और पार्टीबाजी के कारण सामूहिक प्रयास संभव नहीं होते।

सरकार के द्वारा चलाई गई ''राजीव गांधी जल प्रबंधन योजना'' जैसी उपयोगी स्कीमस् व्यावहारिक धरातल पर साकार नहीं होती। कारण, राजनेता और नौकरशाही इस स्कीम को सफल बनाने में तकिक भी रुचि नहीं रखती। दीनदयाल शोध संस्थान ने चित्रकूट इलाके में इस योजना का सदुपयोग करने का निश्चय किया। गांव-गांव में ग्रामवासियों की बैठकें की, उन्हें यह योजना समझाई। ग्रामवासियों को

गुलामी के पूर्व हमारी न्याय व्यवस्था बहुत सरल, तत्काल निर्णायक एवं संतोषप्रद हुआ करती थी। वह 'पंचमुखी परमेश्वर' के नाम से जानी जाती थी।

सरकार द्वारा चलाई गई 'राजीव गांधी जल प्रबंधन योजना' जैसी उपयोगी योजनाएं व्यावहारिक धरातल पर साकार नही होती। कारण, राजनेता और नौकरशाह इसे सफल बनाने में रूचि नही रखते।